चयनित नाटकों का रंगशिल्प

डॉ. महेश पंड्या

१. प्रस्तावना

आधुनिक नाटककारों में हिन्दी रंगमंच को समृद्ध करने में मोहन राकेश का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके सभी नाटक अभिनेयता की दृष्टि से पूरे सफल हुए है। रंगमंच नाटक का अभिन्न अंग है। नाटक के प्रदर्शन की सफलता में अभिनेताओं के साथ दर्शकों की क्षमता और अभिरूचि का भी महत्व होता है। इसके अलावा दृश्यबंध, प्रकाशयोजना, ध्वनियोजना और वेशभूषा आदि के उचित प्रयोग से नाटक प्रभावशाली बनता है।

नाटक तथा रंगमंच का सम्बन्ध शरीर तथा आत्मा जैसा है। दोनों परस्पर पूरक बनकर सर्जनात्मक अभिव्यक्ति करते हैं। नाटक की अंतिम कसौटी रंगमंच है। जैसे व्यक्ति की पहचान उसके कर्मो द्वारा होती है। वैसे ही नाटक की पहचान रंगमंच द्वारा संभव है। राकेश ने कहा है – "एक कृति के रूप में नाटक सभी सफलता प्राप्त कर सकता है जबकि उसमें रंगमंच पर अभिनीत होने की संभावनाएँ निहित हों। लिखा गया नाटक एक हड्डियों के ढांचे को तरह है, जिसे रंगमंच का वातावरण ही मांसलता प्रदान करता है।"[1] जब तक नाटक का मंचीकरण नहीं होता नाटक अपूर्ण माना जाता है। किसी नाट्य कृति का एकान्त कक्ष में बैठकर रसास्वादन करमने में जो आनंद मिलता है। उससे कई गुना ज्यादा आनंद रंगमंच पर दर्शकों के साथ बैठकर देखने से मिलता है। अतः नाटक का प्रकाश उसकी मंच प्रक्रिया के बाद ही होना चाहिए। क्योंकि नाटक साहित्य तथा क्रियाकलाप दोनों का समन्वित रूप है। इसके बारे में गिरीश रस्तोगी के मतानुसार "नाटक न केवल साहित्य है और न केवल कला यह उसकी जटिलता है। वह एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में और विशिष्ट के रूप में पहचानी जानी चाहिए।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि नाटक भावगत माध्यम होते हुए भी कहानी, उपन्यास या काव्य की भ्रांति नहीं है।

२. रंगमंच का स्वरूप

रंगमंच शब्द की उत्पति रंग और मंच के योग से हुई है। अभिनव गुप्तचार्य ने रंग शब्द का प्रयोग "मंडप अर्थात् रंगमंचीय" या नाट्यमंडप के अर्थ में लिखा है। "मंच" एक अर्वाचीन शब्द है जिसका अर्थ है, वह मंडप या कार्य स्थान जहाँ कोई प्रयोग अर्थात् नाट्याभिनय किया जाय। इस प्रकार "रंग" और "मंच" दोनों का अर्थ एक ही है। नाटक के लिए एक सुव्यवस्थित और सुनियोजित रंगमंच का होना बहुत आवश्यक है।

नाटक का माध्यम रंगमंच है। नाटककार को इसी रंगमंच के आधार पर अपने नाटक की रूपरेखा बनानी पड़ती है। उसकी चेतना में रंगमंच की संभावनाओं और शक्तियों का स्पष्ट रूप रहना आवश्यक है। अन्य वह भाषा को ही अपना माध्यम समझकर प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से शक्तिहीन रचना कर बैठेगा। नाटककार रंगमंच की परिकल्पना में परिवर्तन परिवर्धन और विकास कर सकता है। "वास्तव में रंगमंच नाटककार के लिए यह शक्ति और तत्व है जिनके द्वारा नाटक मूर्त और जीवंत रूप धारण करता है और जो रंगमंच की सभी शैलियों से निश्चित रूप से वर्तमान रहता है।"[3] डॉ. अज्ञात ने रंगमंच की परिभाषा देते हुए लिखा है - "रंगमंच शब्द की उत्पत्ति बड़ी रोचक है। वह दो शब्दों 'रंग' और 'मंच' के योग से बना है। अभिनय गुप्ताचार्य ने रंग शब्द का प्रयोग 'मंडप' अर्थात् 'रंगमंडप' या 'नाट्यमंडप' के अर्थ में लिखा है। 'मंच' एक अर्वाचीन शब्द है जिसका

अर्थ है वह 'मंडप' या कार्य स्थान जहाँ कोई प्रयोग अर्थात् नाट्याभिनय किया जाए। इस प्रकार 'रंग' और 'मंच' दोनों का अर्थ एक ही है।"[4] रंगमंच की परिकल्पना को हम इस प्रकार उपस्थित कर सकते हैं।
नाटककार को इन शक्तियों से घनिष्ठ परिचय रखना पड़ता है। इन सभी तत्वों का सम्पर्क विश्लेषण करने के लिए इसका वैज्ञानिक वर्गीकरण उपर्युक्त किया गया है। रंगमंच नाटककार का अनिवार्य साधन है, वह उसकी तनिक भी उपेक्षा नहीं कर सकता।

३. रंगशिल्प

रंगशिल्प के अन्तर्गत दृश्यबंध मंच पर प्रयुक्त प्रकाश योजना, ध्वनि संयोजन, वेशभूषा आदि का समावेश होता है। नाटक के प्रदर्शन में ये सारे साधन मूक होते हुए भी नाटक को अधिक प्रभावशाली और सफल बनाते हैं। शिल्प का अर्थ देते हुए डॉ. विश्वनाथ शर्मा के मतानुसार - "शिल्प का अर्थ है शिल्प हस्तकला आदि कर्म मंच शब्द से जुड जाने से मंच सम्बन्धी कला अथवा कार्य का बोध। इसे अंग्रेजी में स्टेज अथवा टेकनीक स्टेज क्राफ्ट कहा जाता है।"[5] कुछ विद्वान किसी भाव अथवा अनुभूति को निश्चित स्वरूप देनेवाले पक्ष को शिल्प विधान मानते है। कुछ विद्वान शिल्प को शैली, ढाँचा, तौर-तरीका आदि अर्थो में मानते है।

४. दृश्यबंध

दृश्यबंध में निष्प्राण वस्तुओं का विशेष महत्व होता है। मोहन राकेश के नाटकों में अंक विभाजन बड़ी सफलता के साथ हुआ है। "आषाढ़ का एक दिन" में तीन अंक है। तीनों अंकों का दृश्यस्थान एक ही है। समय के अनुसार दृश्य में परिवर्तन आता है। जैसे - "एक साधारण प्रकोष्ठ दीवारें लकड़ी की है, परन्तु निचले भाग में चिकनी मिट्टी से पोती गई है। बीच बीच में मेरू से स्वस्तिक चिन्ह बने है जहाँ से बीच बीच में बिजली काँपती दिखाई देती है।"[6] इस प्रकार छाज में धान कटकती हुई अम्बिका, गवाक्ष से बाहर जाकर आषाढ़ की वर्षा को निहारना आदि दृश्यबंध सामने आते है।

'लहरों के राजहंस' में सुन्दरी का कक्ष में झुला, एक मत्स्याकार आसन, आगे और पीछे के भागों में दो दीपाधार पूरे नाटक में यही दृश्य बना रहता है। वह नाटक भी तीन अंकों में विभाजित है। 'आधे अधूरे' में एक भी अंक नहीं है। सभी घटनाएँ एक ही स्थान और एक ही दृश्य में दिखाई जाती है। "सब रूपों में इस्तेमाल होनेवाला वह कमरा जिसमें उस घर के व्यतीत स्तर के कई एक टूटते अवशेष, सोफासेट, डाईनिंग टेबल, कबाड और ड्रेसिंग टेबल आदि किसी न किसी तरह अपने लिए जगह बनाये है।"[7] सारा परिवार को टूट चुका है, उसके घर का दृश्य ही संपूर्ण नाटक में विभाजन है। अतः कहा जा सकता है कि यह नाटक दृश्य योजना की दृष्टि से अत्यंत सफल है।

'पैर तले की जमीन' नाटक दो अंकों में विभाजित है। इसमें क्लब का दृश्य दिखाया गया है। जहाँ झूली प्लेटों, खाली और भरे हुए गिलासों तथा बिखरे हुए ताश के पते नज़र आते है। इस प्रकार दृश्यबंध की दृष्टि से मोहन राकेश के नाटक सफल रहे हैं।

५. प्रकाश योजना

अभिनय कला तथा उसके माध्यम से गीत तथा कार्य को पूर्णतः व्यंजित करने के लिए पर्याप्त तथा समुचित प्रकाश व्यवस्था की आवश्यकता होती है। रंगमंच पर अभिनेता तथा दृश्यों को उनके नाटकीय महत्व के संदर्भ में प्रस्तुत करना प्रकाश व्यवस्था का पहला दायित्व है। 'आषाढ़ का एक दिन' में प्रकाश योजना का निरूपण सुंदर ढंग से हुआ है। विलोम के प्रवेश के समय अम्बिका के मुख पर देख सकते है। "अम्बिक, आँचल से मुँह

उठाती है । अग्निकाष्ठ के प्रकाश में उसके सुख की रेखाएँ गहरी और आँखें धंसी सी दिखायी देती है ।''[8] इस प्रकार इस नाटक में मल्लिका के घर में प्रकाश-योजना का आयोजन किया गया है ।

'लहरों के राजहंस' नाटक में मोहन राकेश ने प्रकाश के विषय में विशेष निर्देश नहीं दिया है । नाटक का आरंभ अंधकार से होता है, फिर तीनों अंकों में क्रमशः रात उतरने का समय, रात का अंतिम पहर, दीपाधार का प्रकाश फिर सुबह आदि में प्रकाश का थोड़ा संकेत दे दिया है ।

'आधे अधूरे' नाटक में स्त्री, लड़का और बड़ी लड़की तीनों के संवाद के समय प्रकाश योजना का आयोजन किया गया है । ''लड़का अपनी काटी तस्वीर पल भर हाथ में लेकर देखता है, फिर चक् चक् उसे ब़े बड़े टुकडों में करतने लगता है जो नीचे वहाँ पर बिखरते जाते है ।''[9]

'पैर तले की जमीन' नाटक के बारे में मोहन राकेश चाहते थे कि ''मंच का थोड़ा सा ही हिस्सा दिखाया जाए और पूरा मंच कभी न प्रकट हो ।''[10] इस नाटक में दूसरे अंक के प्रारंभ में प्रकाश योजना दिखाई देती है । जैसे बिजली को बत्तियाँ गुल होने से बार छः जगह बड़ी बड़ी मोमबतियों जला दी गई है । अंगुठी में लड़किया सुलग रही है । उनकी आँच से भी हल्की रोशनी है इस प्रकार प्रकाशयोजना की दृष्टि से मोहन राकेश के नाटक सफल रहे है ।

संदर्भ ग्रंथ

१. मोहन राकेश : रंगशिल्प और प्रदर्शन, डॉ. जयदेव तनेजा, पृ.33
२. मोहन राकेश और उनके नाटक, गिरीश रस्तोगी, पृ.12
३. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, नेमिचंद्र जैन, पृ.299
४. वही, पृ.299
५. मोहन राकेश और उनके नाटक, डॉ. गिरीश रस्तोगी, पृ.12
६. आषाढ़ का एक दिन, मोहन राकेश, पृ.13
७. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचंद्र जैन, पृ.243
८. आषाढ़ का एक दिन, मोहन राकेश, पृ.42
९. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, संवादक – नेमिचंद्र जैन, पृ.288